an>

Title: Regarding Implementatin of scientific methods in distribution of water in Canals.

डॉ. महेन्द्र नाथ पाण्डेय (चन्दौली) : उपाध्यक्ष महोदय, आपने मुझे जीरो ऑवर में बोलने का मौका दिया, उसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। मैं सदन में उत्तर प्रदेश, खासकर पूर्वी उत्तर प्रदेश के नहरों के बारे में एक बहुत लोक महत्व की बात रखना चाहता हूं। हमारे पूर्वी उत्तर प्रदेश में अतिवृÂिट, अनावृÂिट से किसान मार खा रहे हैं। जब नहरों में पानी की जरूरत होती है तब उनमें पानी नहीं होता। जो फसल थोड़ी बहुत बची, खड़ी है, तो अब शारदा सहायक नहरों में पानी दिया जा रहा है। हमारे संसदीय क्षेत्र के चंदौली, भूपौली और नारायणपुर में पानी दिया जा रहा है। वहां तटबंध टूट रहे हैं, तो उन्हें कोई देखने वाला नहीं है। अभियंता मोटी-मोटी तन्ख्वाहें लेकर घर बैठे रहते हैं। किसान को बताना पड़ता है कि मेरी नहर टूट गयी है। मैं पूछना चाहता हूं कि यह क्या व्यवस्था हैं? आज हम मंगल यान पर जा रहे हैं। इसके लिए आपका अभिनंदन है और यह जाना चाहिए। लेकिन आज फ्रांस में ऐसी व्यवस्था है कि जिस नहर को जितने पानी की जरूरत है, उतना ही पानी छोड़ा जाता है और हमारी नहरें भगवान भरोसे हैं। शारदा सहायक की नहरें भगवान भरोसे हैं। भूपौली, नारायणपुर और चन्द्रप्रभा की नहरें भगवान भरोसे हैं। मेरा आपके माध्यम से निवेदन है कि सरकार की तरफ से एक निर्देश जाये कि नहरों में वैज्ञानिक पद्धति से सिंचाई की व्यवस्था करके किसानों को राहत दी जाये और समय से उन्हें पानी दिया जाये।